प० अनन्तराम के प्रबन्ध से
सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्मप्रचारक प्रेस
देहली में मुद्रित।

॥ ॐ ॥

# हिन्दी जैन शिक्षा।

## चतुर्थ भाग

लेखक और प्रकाशक
सेठ भगवानदासात्मज लक्ष्मीचन्द्र घीया
प्रोवीन्सीयल सेक्रेटरी श्री जैन श्वेताम्बर
कान्फ्रेंस-प्रतापगढ़
( राजपूताना ) मालवा।

प्रबन्धकर्त्ता

श्री आत्मानन्द जैन पुस्तक प्रचारक मण्डल (नौघरा) देहली

वीर सं० २४४२ | आत्म सम्वत् २०
विक्रम सं० १९७३ | ईस्वी सन् १९१६

प्रथमा वृत्ति २०००] [मूल्य रु० ≡) आना

# प्रस्तावना ।

सभ्य महोदय गण !

हिन्दी जैन–शिक्षा का यह चतुर्थ भाग भी आप की सेवा में उपस्थित किया जाता है—

ये भाग केवल इसी उद्देश से लिखे गए हैं कि व्यावहारिक शिक्षा के साथ २ ही धार्मिक शिक्षा का प्राप्त होना आवश्यक है । अतः—

इन का प्रचार बढ़ाने के लिये स्कूलों में दाखिल कराने की कोशिश करना प्रत्येक जैन सज्जन का कर्तव्य है। आशा है कि जैन सज्जन इस बात पर अवश्य ध्यान देने की कृपा करेंगे।

अन्त में विद्वानों से निवेदन है कि इस भाग में यदि किसी प्रकार कोई त्रुटि उन्हें मालूम दे तो कृपया वे अवश्य सूचना दें ताकि आगामी आवृत्ति में वह सुधार ली जाय ।

निवेदक

घीया लक्ष्मीचन्द्र

# हिन्दी जैन शिक्षा।

## चतुर्थभाग

भूर्भुवः स्वस्त्रयं यत्र वेलाचलकुलायते ।
अपाराय नमस्तस्मै जिनबोधपयोधये ॥१॥
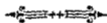
## पाठ १

### यह संसार अनादि अनन्त स्थित है ।

१ यह संसार अनादि और अनन्त है । इस का कर्त्ता हर्त्ता यानी बनाने और नाश करने वाला कोई नहीं है । द्रव्यार्थिक नय से यह नित्य और पर्यायार्थिक नय से ( पर्यायों के बदलने से ) अनित्य है ।

२ प्रत्येक कालचक्र के दो विभाग होते हैं । १ उत्सर्पिणी २ अवसर्पिणी ।

३ उत्सर्पिणी काल उस को कहते हैं कि जिस में आयुष्य, बल और शरीर आदि प्रत्येक वस्तु की, प्रतिदिन वृद्धि होती जाय ? इस के ६ आरे ( हिस्से ) हैं। १ दुःषमदुःषम २ दुःषम ३ दुःषम सुषम ४ सुषम दुःषम ५ सुषम ६ सुषम सुषम।

४ अवसर्पिणी काल उस को कहते हैं, जिस में आयुष्य, बल, और शरीर आदि वस्तुओं की प्रतिदिन न्यूनता होती जाय। इस के भी ६ आरे होते हैं। १ सुषम सुषम २ सुषम ३ सुषम दुःषम ४ दुःषम सुषम ५ दुःषम ६ दुःषम दुःषम।

५ प्रत्येक उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल में यथार्थ धर्म का कथन करने वाले चौबीस तीर्थङ्कर, तीसरे और चौथे आरे में होते हैं।

६ उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी इन दोनों का एक काल चक्र २० कोड़ा कोड़ी सागरोपम का होता है ऐसे काल चक्र अनन्त होगये और अनन्त होंगे ? उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल का परिवर्त्तन ५ भरत और ५ ऐरावर्त्त इन १० क्षेत्रों में होता है। ५ महाविदेह क्षेत्रों

में तो चतुर्थकाल के माफ़िक़ शरीर वस्त्रादि हमेशह एक जैसे रहते हैं।

७ ईश्वर को जगत् का कर्त्ता मानना ठीक नहीं। क्योंकि संसार के जीवों में सुख दुःख पाया जाता है। यदि ईश्वर ऐसे जीवों को बनावे तो रागी द्वेषी होने का प्रसंग आयगा। ईश्वर तो वीतराग ही होता है।

८ ईश्वर की भक्ति से पुण्यबंध और मुक्ति की प्राप्ति होती है ( निमित्त कारण होने से )।

९ तीर्थङ्कर की भक्ति मूर्त्ति द्वारा हो सकती है। क्योंकि विना किसी आलम्बन के ध्यान नहीं होसकता।

---

## विद्यार्थियों से पूछने के प्रश्न।

( १ ) जगत् का कर्त्ता कोई है या नहीं ?

( २ ) कालचक्र के कितने विभाग हैं ?

( ३ ) उत्सर्पिणी काल किसे कहते है ? और छः आरे कौन २ होते हैं ?

( ४ ) अवसर्पिणी काल किसे कहते हैं ? और इस के छः आरों के नाम बताओ ?

( ५ ) सच्चे धर्म का कथन करने वाले तीर्थङ्कर कितने और कब होते हैं ?

( ६ ) अब तक कितने कालचक्र हो गये और कितने होंगे ?

( ७ ) ईश्वर जगत् का कर्त्ता नहीं हो सकता इस का कारण क्या है ?

( ८ ) ईश्वर की पूजा भक्ति करने का कारण क्या है ?

( ९ ) तीर्थङ्कर की भक्ति कैसे ( किस के द्वारा ) हो सकती है ?

---

# पाठ २

## पृथ्वी कैसी है ?

१ यह पृथ्वी शिला के आकार-सपाट (चपटी) है, गेंद के माफिक गोल नहीं ।

२ यह पृथ्वी स्थिर है सूर्य और चन्द्र के विमान इसके ऊपर मेरु पर्वत के इर्द गिर्द घूमते हैं । रात दिन होने का यही कारण है ।

३ सूर्य और चन्द्रमा के विमान रत्नों के हैं इससे प्रकाश होता है। इन विमानों में सूर्य और चन्द्र नामक ज्योतिषी देवों के इन्द्र निवास करते हैं।

४ इस पृथ्वी के बीच में थाली के आकार १ लक्ष योजन प्रमाण जम्बू द्वीप है। इसमें मेरु पर्वत के इर्द गिर्द १ भरत १ ऐरावर्त्त और पूर्व पश्चिम में महाविदेह क्षेत्र हैं। और इसके इर्द गिर्द चूड़ी के आकार २ लक्ष योजन प्रमाण लवण समुद्र है इसके बाद ४ लक्ष योजन का धातकी खंड है। इसमें २ भरत २ ऐरावर्त्त और २ महाविदेह क्षेत्र ( दो मेरु आश्री ) हैं। इसके बाद आठ लक्ष योजन का कालोदधि समुद्र है इसके बाद पुष्करार्द्ध (आधा) द्वीप आठलक्ष योजन का है। इसमें दो २ भरत २ ऐरावर्त्त और २ महाविदेह क्षेत्र हैं और २ मेरु हैं।

५ इन ढाई द्वीपों में यानी ४५ लक्ष योजन के अन्दर मनुष्य लोक है ( अर्थात् मनुष्य इन्हीं क्षेत्रों में उत्पन्न होते हैं )। मनुष्योत्तर पर्वत आधे द्वीप को घेरेहुए हैं इसी प्रकार असंख्यात द्वीप समुद्र एक से एक द्विगुण प्रमाण वाले हैं इनमें तिर्यञ्च के सिवाय मनुष्य नहीं

उत्पन्न होते। सूर्य चन्द्र भी जुदे जुदे द्वीप समुद्र आश्री असंख्य हैं। जम्बू द्वीप के ऊपर दो सूर्य और दो चन्द्र घूमते हैं।

६ असंख्यात द्वीप समुद्रों के बाद अलोक हैं याने आकाश के सिवाय और कुछ नहीं है।

---

### प्रश्न

१ यह पृथ्वी कैसी है ?
२ पृथ्वी घूमती है या चन्द्र सूर्य ?
३ सूर्य चन्द्र के विमान कैसे हैं ?
४ इस पृथ्वी पर क्या क्या है ?
५ मनुष्य लोक कहां है ?
६ असंख्यात द्वीप समुद्रों के बाद क्या है ?

---

## पाठ ३

### पृथ्वी के ऊपर क्या है ?

१ इस पृथ्वी के ऊपर आकाश में ज्योतिष मण्डल

है। सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र और तारा इन पांच ज्योतिष देवों के विमान हैं, जो आकाश में चमकते हुए दिखाई देते हैं। (ज्योतिष मण्डल को तिर्छे लोक में ही समझना)

२ इनके ऊपर बारह देव लोक नौ ग्रैवेयक और पांच अनुत्तर देव लोक अनुक्रम से हैं। इनमें वैमानिक देवता निवास करते हैं।

३ इनके ऊपर उलटे छत्राकार स्फटिक रत्न की सिद्धशिला ४५ लक्ष योजन प्रमाण है उसके ऊपर आकाश के एक योजन के चौबीसवें भाग में सिद्धात्मा अर्थात् मुक्ति के जीव अनन्त सुखमय ज्योतिःस्वरूप विराजमान हैं। उनके ऊपर अलोक है।

---

## प्रश्न

१ ऊर्ध्व लोक में क्या है ?

२ ज्योतिष मंडल के ऊपर क्या है ?

३ सिद्धशिला कहां है ?

---

# पाठ ४

## इस पृथ्वी के अन्दर क्या है ?

१ इस रत्न प्रभा पृथ्वी में पहली नरक भूमि के आंतरों में ८ व्यन्तरिक ८ वाणव्यन्तर और १० भवनपति और पहले नरक के जीवों के स्थान हैं जिन में वे देव और नारकी जीव अपने अपने स्थानों में निवास करते हैं।

२ पहली पृथ्वी के नीचे दूसरी छः पृथ्वियां हैं। उनमें छओं नरकों के जीव जुदे जुदे अपने अपने स्थान पर निवास करते हैं। सब मिलाकर सात नरक हैं।

### प्रश्न

१ व्यन्तर, वाणव्यन्तर तथा भवनपति देवों के स्थान कहां हैं ?

२ नरक लोक कहां है ?

३ अलोक कहां है ?

## पाठ ५

### इस जगत् (संसार) में क्या २ पदार्थ हैं ?

१ इस जगत् के अन्दर मुख्य दो पदार्थ हैं १ जीव और २ अजीव। जीव उसे कहते हैं जिसमें चैतन्यशक्ति पाई जाय। अजीव उसे कहते हैं जिसमें चैतन्यशक्ति न हो।

२ जीव दो प्रकार के होते हैं मुक्त और संसारी जो अष्ट कर्मों के बन्धन से रहित होकर मोक्ष को प्राप्त हुए हों वे मुक्त कहलाते हैं और अष्ट कर्मों के बन्धन से जो जन्म मरण द्वारा सुख दुःख भोगते हैं वे संसारी हैं।

३ संसारी जीव दो प्रकार के होते हैं १ त्रस और २ स्थावर। त्रस उनको कहते हैं जो हिलते चलते हैं, स्थावर उनको कहते हैं जो स्थिर रहते हैं।

४ पृथ्वी, अप, तेज, वायु और वनस्पति ये पांच स्थावर कहे जाते हैं और यही एकेन्द्रिय कहाते हैं। इनके स्पर्श इन्द्रिय ही होती है। त्रसके जीव दो तीन चार और पांच इन्द्रिय वाले होते हैं इसीलिये इनको द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय कहते हैं। जैसे

५ एक स्पर्शन, दूसरी रसना ( जिह्वा ) वाले द्वीन्द्रिय और घ्राण ( नासिका ) के बढ़ने से त्रीन्द्रिय और चक्षु (आंख) के बढ़ने से चतुरिन्द्रिय और श्रोत्रेन्द्रिय (कान) के बढ़ने से पंचेन्द्रिय कहे जाते हैं।

६ पांच स्थावर और एक त्रस-यही षट काय कहे जाते हैं।

## प्रश्न

१ इस जगत् में क्या २ पदार्थ हैं ?
२ जीव कितने प्रकार के होते हैं ?
३ संसारी जीव कितने प्रकार के होते हैं ?
४ स्थावर किस को कहते हैं ?
५ एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक का बयान करो ?
६ छः काय किन्हें कहते हैं ?

---

# पाठ ६

## सुदेव का स्वरूप

१ सुदेव उसे कहते हैं जो रागद्वेष से रहित हो।

२ राग रहित अर्थात् स्त्री आदि के साथ काम क्रीड़ा कुतूहलादि से रहित निर्विकार स्वरूप, तथा पुत्र कलत्रादि के ममत्व से रहित हो।

३ द्वेष रहित अर्थात् तलवार, धनुष, त्रिशूल, भाला आदि शस्त्र शस्त्रु संहारक चिन्होंसे रहित, शांत मुद्रा वाला हो वही सुदेव हैं। इससे विपरीत स्त्री शस्त्रादि के धारण करने वाले सुदेव नहीं कहाते।

४ सुदेव अष्टादश दूषणों से * मुक्त और द्वादश ‡ गुणों से युक्त जो हो वह सुदेव है। सुदेवके स्वरूप का निश्चय, चरित्र और मूर्ति द्वारा हो सकता है।

---

* १८ दूषणों के नाम—दानांतराय १ लाभांतराय २ भोगांतराय ३ उपभोगांतराय ४ वीर्यान्तराय ५ हास ६ रति ७ अरति ८ भय ६ जुगुप्सा ( घृणा ) १० शोक ११ काम १२ मिथ्यात्व १३ अज्ञान १४ निद्रा १५ अविरति १६ राग १७ द्वेष १८

‡ १२ गुणों के नाम—अशोकवृक्ष १ सुरमपुष्पवृष्ट २ दिव्य ध्वनि ३ चामर ४ आसन ( सिंहासन ) ५ भामण्डल ६ दुंदुभि ७ छत्रत्रय ८ ज्ञानातिशय ६ वचनातिशय १० पूजातिशय ११ अपायापगम अतिशय ( जहाँ पर तीर्थंकर भगवान विचरते हैं वहां पर महामारी दुष्काल आदि उपद्रवों का न होना ) १२

### प्रश्न

१ सुदेव कैसा होता है ?

२ राग रहित की क्या पहचान है ?

३ द्वेष रहित की क्या पहचान है ?

४ सुदेव का स्वरूप किन २ उपायों से जाना जा सकता है ?

---

## पाठ ७

### सद्गुरु का स्वरूप

---

१ सद्गुरु उनको कहते हैं जो पांच महाव्रतों के धारक हों। अर्थात् प्राणातिपात (जीव हिंसा) मृषावाद (झूंठ) अदत्तादान (चोरी) मैथुन (अब्रह्मचर्य) परिग्रह (द्रव्यादि वस्तुओं पर लालसा) इन पांचों से रहित, तथा ५ समिति और ३ गुप्ति के सहित हों १० प्रकार के यति धर्म का पालन करते हों, क्रोध, मान, माया, लोभ इन चार कषायों को और पांच इन्द्रि-

यों के विषयों को जीतने वाले पंचविधआचार के पालने वाले हों और सर्वज्ञ कथित धर्म का उपदेश करने वाले हों।

२ ऊपर कहे हुये गुणों से विपरीत अर्थात् कनक कामिनी का सेवन करने वाला, एकान्त धर्म का कथन करने वाला, रागी, द्वेषी, भांग, गांजा आदि कुव्यसनों का सेवन करने वाला, मन्त्र मन्त्रादि चमत्कार से आजीविका करने वाला, खुश होकर वर प्रदान करने वाला (यों कहने वाला कि जा तेरा भला होगा स्त्री पुत्र व द्रव्य की प्राप्ति होगी) और नाराज़ होकर श्राप देने वाला (यों कहने वाला कि जा, तेरा सत्यानाश होगा) जो हो वह (साधु) सद्गुरु कदापि नहीं हो सकता।

---

### प्रश्न

१ सद्गुरु कैसे होते हैं ? २ कुगुरु कैसे होते हैं ?

---

## पाठ ८

### सुधर्म का स्वरूप

---

१. दुर्गति में पड़ते हुये जीव को बचाकर सद्गतिको

प्राप्त कराने वाला हो ................................. नवतत्त्व, षट् द्रव्य चार निक्षेपे, सातनय, सप्तभङ्गी ........ अनेकान्त वाद- ( स्याद्वाद ) सहित हो वही सुधर्म है।

२ धर्म चार प्रकार का है—दान १ शील २ तप ३ भावना ४।

३ धर्म के बहाने से पशुओं की हिंसा करना और सर्वज्ञ के वचनों से विपरीत एकांत पक्ष का कथन करना यही अधर्म है।

नाट— आज कल संसार में जैन धर्म के सिवाय बौद्ध, वैष्णव, मुसलमान, ईसाई, हिन्दू, आर्यसमाज, ब्रह्म समाज, समसी आदि अनेक धर्म फैले हुए हैं।

जैनों में तीन फिर्के हैं। श्वेताम्बर १ दिगम्बर २ स्थानकवासी ३। मुसलमानों के दो भेद हैं। सीया १ सुन्नी २। ईसाइयों के २ भेद हैं। रोमनकैथलिक १ प्रोटेसटेन्ट २। आर्यसमाज के दो भेद हैं। मांसपार्टी और घासपार्टी। और हिन्दुओं में भी शैव वैष्णव आदि अनेक फिर्के हैं।

प्रश्न

१ धर्म किसे कहते हैं ?
२ धर्म कितने प्रकार का है ?
३ अधर्म किसे कहते है ?

# पाठ ९

## मोक्षमार्ग

१ सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, और सम्यक् चारित्र ये तीनों मिल कर मोक्ष के मार्ग ( यानी उपाय ) हैं; इनको रत्न-त्रय भी कहते हैं ।

२ "तत्त्व श्रद्धानं सम्यक्त्वम्" अर्थात् सच्चे तत्त्वों के ऊपर श्रद्धा हो उसको सम्यक्त्व कहते हैं ।

३ सम्यक् दर्शन यानी सुदेव, सुगुरु, सुधर्म के ऊपर श्रद्धा यानी प्रतीति हो । इससे विपरीति को मिथ्या दर्शन ( मत ) कहते हैं ।

४ सम्यक् ज्ञान यानी जीव अजीवादि नव तत्व तथा षट् द्रव्य वस्तुओं को नय निक्षेप अनेकान्त (स्याद्वाद्) शैली से सापेक्ष नित्यानित्य जानना। इसके विपरीत एकान्त यानी स्याद्वाद अपेक्षा रहित जाननेको मिथ्या ज्ञान कहते हैं।

५ सम्यक् चारित्र २ प्रकार का है। १ देशविरति और २ सर्व विरति। देशविरति यानी सम्यक्त्व मूल द्वादश (१२) व्रत, इन्हें धारण करने वाला श्रावक कहाता है। सर्व विरति यानी पंच महाव्रत, पंच समिति और तीन गुप्ति वगैरह धारण करने वाला साधु-(मुनि) कहाता है। इसके विपरीत अज्ञान (मिथ्या) क्रिया को कुचारित्र कहते हैं।

६ मिथ्या ज्ञान, मिथ्या दर्शन, और मिथ्या चारित्र ये मोक्ष के हेतु नहीं हैं, किन्तु भव भ्रमण के हेतु हैं।

---

## प्रश्न

१ रत्न त्रय किन्हें कहते हैं ?

२ सम्यक्त्व किसको कहते हैं ?

३ सम्यक् दर्शन का कथन करो ?

४ सम्यक् ज्ञान का कथन करो ?
५ सम्यक् चारित्र का कथन करो ?
६ संसार में भव भ्रमण कराने वाले कौन हैं?

## पाठ १०
### मोक्ष में क्या है ?

१ आत्मिक सुख सांसारिक सुख से अनन्तगुण अधिक है अर्थात् अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त चारित्र और अनन्त वीर्य इस अनन्त चतुष्टय से युक्त ज्योतीरूप सिद्धात्मा सिद्धशिला के ऊपर विराजमान हैं।

जो जीव कर्मों से रहित होकर मोक्ष को जाते हैं; वे ही उस प्रकार ज्योतिःस्वरूप होजाते हैं।

## पाठ ११
### जीव मोक्ष से फिर नहीं आता।

बहुत से लोग कहते हैं कि मोक्ष में जाकर जीव फिर

लौट आता है उनका यह कथन ठीक नहीं। क्योंकि मोक्ष सम्पूर्ण कर्मों के सर्वथा नाश होने से होता है। जब संसार में लाने वाले कर्म हीन रहे तो फिर किस कारण से जीव मुक्ति से वापिस आसकेगा।

प्रश्न—यदि मोक्ष से जीव वापिस नहीं आता तब तो किसी दिन यह जगत् संसारी जीवों से खाली हो जायगा ?

उत्तर—संसार में जीव अनन्त हैं इस लिए कितने ही जीवों का मोक्ष होजाय तो भी संसार जीवों से खाली नहीं हो सकता। अनन्त उन्हीं का नाम है जिनका कदापि अंत न हो सके।

---

## पाठ १२

### जैन धर्म को कौन पाल सकता है ?

---

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों ही वर्ण जैन

धर्म को पाल सकते हैं। केवल वैश्यों का ही, जो लोग इस धर्म को समझते हैं वे भूल करते हैं। जैन धर्म के नेता जो २४ तीर्थंकर हुए हैं, वे क्षत्रिय कुल में हुए हैं। गौतम स्वामी आदि गणधर तथा कई आचार्य्य भी ब्राह्मण कुल में होगये हैं। इस वक्त वैश्य लोग अपनी जाति का ही जैन धर्म मान बैठे हैं सो ठीक नहीं।

इस सर्वज्ञ कथित स्याद्वाद निर्मल धर्म को मनुष्य मात्र ही क्या किन्तु पशु पक्षी भी धारण कर सकते हैं। यह बात प्रमाण भूत शास्त्रों से स्पष्ट ज़ाहिर है। जैन धर्म पालक जितने वैश्य जाति के हैं वे एक साथ भोजनादि सर्व व्यवहार सम्बन्ध करलें तो भी शास्त्र विरुद्ध न होगा किन्तु धर्म और सुख सम्पत्ति की वृद्धि का कारण होगा।

जैन धर्म सर्वत्र फैलने नहीं पाता इसका कारण यही है कि हमारे जैन बन्धु गच्छ कदाग्रह में फस कर सिद्धान्तों के तत्त्वों को नहीं फैला सकते। गच्छ भेद कोई मत भेद नहीं किन्तु अलग २ आचार्यों की समाचारी है। इसलिए कदाग्रह करना व्यर्थ है।

---

# पाठ १३

## ईश्वर कर्तृत्व पर विचार

कई लोग ईश्वर को जगत् का कर्त्ता मानते हैं। विचार से देखा जाय तो उनका कहना ठीक नहीं है। क्योंकि ईश्वर को जगत् का कर्त्ता मानने से दयालु नहीं हो सकता। जगत् में बहुत से प्राणी दुःखी देखने में आते हैं यदि ईश्वर जगत् का बनाने वाला माना जाय तो वह दयालु होने से सभी को सुखी ही पैदा करता। यदि कहा जाय कि जीवों के जैसे कर्म होते हैं, ईश्वर उन्हें वैसे ही सृष्टि के आदि में रचता है इस लिए ईश्वर की दयालुता में कोई बाधा नहीं हो सकती, क्योंकि वह न्यायकारी है तो उन्हें जानना चाहिए कि अगर ईश्वर सर्वशक्तिमान और न्यायकारी है तो वह जीवों को पहले बुरे कर्मों से क्यों नहीं रोकता।

इसलिए द्रव्य नय की अपेक्षा से यह जगत् अनादि काल से ऐसा ही चला आया है और ऐसे ही स्थित

रहेगा। और पर्यायार्थिक नय की अपेक्षा से पदार्थों का परिवर्तन होने से ईश्वर जगत् कर्त्ता सिद्ध नहीं होता। इसी कारण से जीव अनादि काल से शुभाशुभ कर्मों के अनुसार सुख दुःख भोगता है। यही मानना यथार्थ है।

---

## पाठ १४

### श्रावक का कृत्य

---

१ प्रभात को जल्दी उठ कर सामयिक प्रतिक्रमण तथा स्वाध्याय करना चाहिये।

२ श्री जिन मन्दिर में जाकर द्वार में प्रवेश करके पहले "निसिहि" ( सांसारिक कार्य्य छोड़ने रूप ) कहना चाहिये।

३ मन्दिर जी का काम काज वा कचरा जाला वगैरह की सम्हाल स्वयम् करने योग्य हो सो आप करे और अन्य से कराने योग्य हो सो अन्य से करावे।

४ दूसरी "निसिहि" करके मन्दिर कार्य छोड़ कर तीन प्रदक्षिणा भगवान के दाहिनी तरफ़ से यानी सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान और सम्यक् चारित्र की आराधन रूप देनी चाहियें।

५ यदि प्रभु की अङ्गपूजा करनी हो तो शरीर शुद्धि तथा शुद्ध वस्त्र पहन कर पीछे तीन प्रदक्षिणा उपरोक्त विधि पूर्वक देकर जिन मन्दिर में कचरा साफ़ कर मयूर पिछ से प्रभु की अङ्गप्रमार्जना करके जीवजन्तु की रक्षा करनी चाहिये।

६ भगवान की डाबी बाजू धूप खेवना, तथा दाहिनी बाजू घृत का दीपक करना चाहिए।

७ 'पञ्चामृत' * से प्रक्षाल कर शुद्ध जल से स्नान कराके तीन अङ्गलूण करके 'नवअङ्ग पूजा' † करनी

---

* दूध, दधि, घृत, शकर जल पञ्चामृत कहा जाता है।

† 2 चरन, 2 गूंटन, 2 पोंचे, 2 खवे (कंधे), मस्तक, ललाट, कण्ठ, हृदय और नाभी यह नौ अङ्ग गिने जाते हैं।

पीछे शुद्ध पञ्च वर्ण के पुष्प चढ़ा कर हार और मुकुट कुंडल आभूषण अङ्गरचनादि धारण करना चाहिये।

८ अष्ट द्रव्य ‡ आदि से अग्र पूजा करके आरती मङ्गल दीपक उतार कर पीछे चतुर्गति निवारण रूप चांवल का स्वस्तिक ( साथिया ) करके ऊपर सम्यक् ज्ञान, सम्यक्दर्शन और सम्यक् चारित्र रूप तीन पुंज ( ढगली ) बना कर ऊपर चन्द्राकार सिद्धिशिला बना कर सिद्धिरूप ढगली उसके ऊपर करके फल चढ़ाना चाहिये।

९ तीसरी "निसिहि" कहके भाव पूजा करनी यानी मन, वचन और काया रूप तीर्थ खमासमणा देकर स्त्री को भगवान के बांई तरफ पुरुष को दाहिनी बाजू डावा गोड़ा ऊंचा करके विधिपूर्वक चैत्यवंदन करना। पीछे तीन बार "आवस्सहि" करके घंटा बजाते हुए जैनालय से बाहर जाना चाहिये।

---

‡ न्हवण ( जल ) विलेपन, कुसुम, धूप, दीप, अक्षत और नैवेद्य फल यह अष्ट द्रव्य है।

और कुछ समय के लिए शास्त्र स्वाध्याय अवश्य करते रहना चाहिए।

२३ रात्रि को सोते समय सभी जीवों को खमा कर चार शरण चिन्तवन कर नवकार स्मरण करके निद्रा लेनी चाहिए।

२४ अष्टमी चतुर्दशी आदि पर्व की तिथियों में हरा शाक आदि सचित्त का त्यागन करना तथा शील पालना चाहिए।

२५ साल भर में शत्रुंजय, गिरनार, सम्मेतशिखर जी, आबू, चम्पापुरी, पांवापुरी, राजगिरी, केसरिया, जी, अंतरीक्षजी, हस्तिनागपुर, मांडवजी और मक्षी आदि किसी भी तीर्थ की यात्रा अवश्य करनी चाहिए।

२६ जन्म भर में कोई भी जिनमन्दिर, जीर्णोद्धार, शास्त्रोद्धार, साधुसेवा, विद्याशाला, जीवरक्षा आदि धर्म-संस्था को यथा शक्ति खोलकर जन्म सफल करना चाहिए।

॥ इति ॥

# श्री आत्मानंद जैन पुस्तक प्रचारक मंडल

## देहली—आगरा

प्रिय पाठको!

आप भली भांति जानते होंगे कि भारत वर्ष की तमाम धार्मिक व सामाजिक दशा थोड़े समय से बहुत ही खराब हो रही थी और जिसका मुख्य कारण यही था कि भारतवासी ज्ञान से बिलकुल अनभिज्ञ हो गये थे यह देख कर हमारे कुछ अन्य धर्मावलम्बी पुरुषों ने धार्मिक और सामाजिक सुधार के लिये नवीन नवीन संस्थाओं को खोलना आरम्भ किया और बहुत कुछ उन्नति करी और कर रहे हैं इसी तरह से हमारी जैन समाज भी इन बातों में बहुत पिछड़ी थी हम लोगों ने भी समयानुसार उचित समझा कि अपने यहां भी कोई ऐसी संस्था खुलनी चाहिये कि जिससे धार्मिक और सामाजिक सुधार होवे और जैनी और जैनेत्तर भाइयों की दशा सुधरे यह उचित समझ कर उपरोक्त मंडल प्रथम देहली में संवत् १९६९ में स्थापित किया गया जिस में क्रमानुक्रम से करीब ६० पुस्तकें धार्मिक सामाजिक विशेष

हिन्दी भाषा की मिलती हैं क्योंकि इस मंडल का विशेष प्रयत्न हिन्दी भाषा के प्रचार का ही है पाठकों से हमारा निवेदन है कि इस मंडल में जो कोई धार्मिक और सामाजिक सुधार पर पुस्तकें लिख कर भेजेंगे तो वह इस के द्वारा छप सकती है अगर पुस्तक छपाने योग्य हों। विशेषता इस मंडल में यह है कि द्रव्य के लाभ के लिये यहां पर काम नहीं किया जाता है बल्कि बहुत ही कम कीमत पर ही पुस्तकें बिक्री होती हैं ताकि आम तौर पर लाभकारी होवें हमें यह आशा है कि हमारे जैन और जैनेत्तर भाई यथा शक्ति इसके कार्य-क्रम में सहायता दे तन मन धन से अपना पुरुषार्थ दिखायेंगे इस मंडल में जो कुछ कार्य्य अब तक हुआ है वह बग़ैर वेतन के पुरुषों ने ही किया है-इस मंडल में नवीन पुस्तकें वीतरागस्तोत्र, जीवविचार, नवतत्त्व, जैनतत्त्वसार, कर्मग्रंथ आदि भी हिन्दी भाषा में छपे हैं और छप रहे हैं क्योंकि ऐसी पुस्तकों की जैन समाज तथा अन्य समाजों के, पाठशाला तथा विद्याशाला में विद्यार्थियों के पढ़ाने के लिये अति उपयोगी हैं।

मिलने का पता—

**श्री आत्मानंद जैन पुस्तक प्रचारक मण्डल**

रोशन मुहल्ला, आगरा

# लीजिये !

## सद्धर्म-प्रचारक यन्त्रालय

### मन्दिर सत्यनारायण

देहली में

अंग्रेज़ी, हिन्दी और उर्दू

*तीनों भाषाओं में*

प्रत्येक प्रकार की छपाई का काम

(यानी पुस्तक, समाचार पत्र और आवश्यक आदि)

**शुद्ध, सुन्दर, सस्ता और शीघ्र**

यथासमय तयार कर दिया जाता है

एक वार कृपा कर कार्य भेज कर

परीक्षा कीजिये।

निवेदकः—

**अनन्तराम शर्म्मा**

हिन्दी भाषा की मिलती हैं क्योंकि इस मंडल का विशेष प्रयत्न हिन्दी भाषा के प्रचार का ही है पाठकों से हमारा निवेदन है कि इस मंडल में जो कोई धार्मिक और सामाजिक सुधार पर पुस्तकें लिख कर भेजेंगे तो वह इस के द्वारा छप सकती हैं अगर पुस्तक छपाने योग्य हों। विशेषता इस मंडल में यह है कि द्रव्य के लाभ के लिये यहां पर काम नहीं किया जाता है बल्कि बहुत ही कम कीमत पर ही पुस्तकें बिक्री होती हैं ताकि आम तौर पर लाभकारी होवें हमें यह आशा है कि हमारे जैन और जैनेतर भाई यथा शक्ति इसके कार्य-क्रम में सहायता दे तन मन धन से अपना पुरुषार्थ दिखायेंगे इस मंडल में जो कुछ कार्य्य अब तक हुआ है वह बग़ैर वेतन के पुरुषों ने ही किया है-इस मंडल में नवीन पुस्तकें वीतरागस्तोत्र, जीवविचार, नवतत्व, जैनतत्वसार, कर्मग्रंथ आदि भी हिन्दी भाषा में छपे हैं और छप रहे हैं क्योंकि ऐसी पुस्तकों की जैन समाज तथा अन्य समाजों के, पाठशाला तथा विद्याशाला में विद्यार्थियों के पढ़ाने के लिये अति उपयोगी हैं।

मिलने का पता—

**श्री आत्मानंद जैन पुस्तक प्रचारक मण्डल**
रोशन मुहल्ला, आगरा

# लीजिये !

## सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय

### मन्दिर सत्यनारायण

**देहली में**

अंग्रेजी, हिन्दी और उर्दू

तीनों भाषाओं में

प्रत्येक प्रकार की छपाई का काम

(यानी पुस्तक, समाचार पत्र और जाबवर्क आदि)

**शुद्ध, सुन्दर, सस्ता और शीघ्र**

**यथासमय तयार कर दिया जाता है**

एक वार कृपा कर कार्य भेज कर

परीक्षा कीजिये ।

निवेदकः—

**अनन्तराम शर्म्मा**